आजीविकाएं (जारी)

राजस्थान का थार इलाका कई मायनों में कच्छ जैसी शख्सियत रखता है। यहां समुदायों द्वारा सोचे गए, सींचे गए और चलाए जा रहे समुदाय-केंद्रित विकास कार्यक्रमों में साझा विश्वास रखने वाले संगठनों का एक परिवार उरमुल के नाम से सक्रिय है।

बाएं: *मरूस्थली बंकर विकास समिति का एक बुनकर। यह समिति रेगिस्तान के बुनकरों का एक आजीविका संवर्धक समुदाय आधारित संगठन है जो उरमुल नेटवर्क से जुड़ा हुआ है।*

इस तरह के कार्यक्रम केवल नागर समाज तक ही सीमित नहीं हैं। झारक्राफ्ट (नीचे देखें) झारखंड सरकार का एक कार्यक्रम है जो बांस, बेंत, मिट्टी, लाख, जूट, घास और धातुकर्म आदि पर आधारित जनजातीय कौशलों को संरक्षण दे रहा है। केवल पिछले १० साल के भीतर ही इस कार्यक्रम ने तीन लाख से ज्यादा परिवारों को आजीविका प्रदान की है या उसमें इजाफा किया है।

झारक्राफ्ट से जुड़े मिट्टी की चीजें बनाने वाले कारीगर।

'ढोकरा' धातुकर्म - यह झारखंड की ४००० साल पुरानी जनजातीय कला शैली है।

उत्पादन और उपभोग, दोनों के स्थानीयकरण की सोच केवल 'कुटीर उद्योगों' तक ही सीमित नहीं है बल्कि 'औद्योगिक स्तर' के समझे जाने वाले उत्पादों तक भी फैली है। तमिलनाडु के कुथम्बक्कम गांव के भूतपूर्व सरपंच इलेंगो आर. आसपास के गांवों का एक ऐसा क्षेत्रीय समूह बनाना चाहते हैं जो साबुन से लेकर बिजली तक हर चीज के उत्पादन में आत्मनिर्भर हो।

बाएं से दाएं: *कुथम्बक्कम, तमिलनाडु के एक कारखाने में काम करते युवा; अनाज प्रसंस्करण मिल ऐसे कुछ उपकरणों में से है जिन्हें परंपरागत रूप से विशाल उद्योगों के लिए आरक्षित समझा जाता रहा है।*